इकाई 26 मुगलकालीन भारत की जनसंख्या

इकाई की रूपरेखा

26.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- 1601 ई. में मुगलकालीन भारत की जनसंख्या के कई आकलनों से परिचित हो सकेंगे;
- जनगणना से पहले की भारतीय जनसंख्या का आकलन करने की विभिन्न विधियों को जान सकेंगे;
- 17-18वीं शताब्दियों में जनसंख्या के विकास की औसत वार्षिक दर पर प्रकाश डाल सकेंगे; और
- मुगलकालीन भारत में शहरी जनसंख्या का आकार बता सकेंगे ।

26.1 प्रस्तावना

जैसा कि विदित है भारत में जनगणना की विधिवत शुरुआत 1872 ई. से हुई। मुगल साम्राज्य में जनसांख्यिकी संबंधी आंकड़ों का काफी अभाव है, कहा जाता है कि अकबर ने जनसंख्या का विस्तार से आकलन करने का आदेश दिया था, पर इस संदर्भ में और कोई जानकारी हमें नहीं मिलती है। यहां तक कि **आइन-ए-अकबरी,** जिसमें विभिन्न प्रकार के आंकड़े सम्मिलित हैं, में भी अकबर के पूरे साम्राज्य या इसके किसी एक भाग में रहने वाली जनसंख्या का कोई आंकड़ा प्रस्तुत नहीं किया गया है।

26.2 मुगलकालीन भारत की जनसंख्या का आकलन

लगभग 1601 ई0 से 1872 ई0 तक के भारत का निश्चित जनसांख्यिकी आंकड़ा प्राप्त करना लगभग असंभव है पर इसे जाने बिना कई पहलुओं पर प्रकाश नहीं डाला जा सकता है। जनसांख्यिकी तत्व को नजरअंदाज कर आर्थिक इतिहास के किसी भी चरण का अध्ययन नहीं किया जा सकता है। आधुनिक समाजों के आविर्भाव के पहले जनसंख्या विकास को अक्सर आर्थिक विकास का सूचकांक माना जाता था। अत: विभिन्न प्रकार के उपलब्ध आंकड़ों की सहायता से 1601 ई. में भारतीय जनसंख्या का आकलन आवश्यक है।

26.2.1 कृषि के अधीन भूमि के आधार पर

मोरलैंड ने **आइन-ए-अकबरी** में दिए गए आंकड़ों के आधार पर जनसंख्या के आकलन का पहला प्रयास किया। **आइन** में दिए गए आंकड़ों के आधार पर उसने उत्तर भारत की जनसंख्या निर्धारित करने का प्रयत्न किया। इसमें **आराजी** (नापा गया इलाका) का आंकड़ा दिया हुआ है जिसे वह बोई हुई (फसल की) कुल भूमि के रूप में मानता है। इस **आराजी** को मोरलैंड फसल के आधीन कुल भूमि के रूप में देखता है। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में कुल खेती की जाने वाली भूमि की तुलना वह **आइन** की **आराजी** से करता है। उसने इन दोनों कालों के बीच (1600 और 1900) जनसंख्या के प्रसार और खेती के प्रसार के बीच एक निश्चित और स्थिर संबंध को माना। उपरोक्त मान्यताओं के आधार पर उसने निष्कर्ष निकाला के 16वीं शताब्दी के अंत में "मुल्तान से मुंगेर तक" 3 से 4 करोड़ लोग रहते थे।

26.2.2 नागरिक : सैनिक अनुपात के आधार पर

दक्खन और दक्षिण भारत की जनसंख्या का पता लगाने के लिए मोरलैंड ने विजयनगर साम्राज्य और दक्खनी सल्तनतों के सैन्य बल को आधार बनाया। उन्होंने मनमाने ढंग से सैनिकों और नागरिकों की जनसंख्या का अनुपात 1 : 30 तय कर लिया। उन्होंने इस आधार पर उस समय की जनसंख्या 3 करोड़ बताई। स्वतंत्रता से पूर्व भारत की सीमा में पड़ने वाले कुल क्षेत्रों की जनसंख्या का आकलन करते हुए उन्होंने बताया है कि अकबर के शासनकाल में 1600 ई. में मुगल साम्राज्य के क्षेत्रों की जनसंख्या 6 करोड़ और कुल भारत की जनसंख्या 10 करोड़ थी।

ये आकलन काफी हद तक स्वीकार किए गए। इसके बावजूद मोरलैंड की आधारभूत मान्यताओं और उसके आंकड़ों पर प्रश्न चिह्न लगाया गया। उत्तरी भारत की जनसंख्या का आकलन करते हुए उन्होंने दो पूर्व धारणाओं का सहारा लिया : (क) केवल खेती की गई भूमि को मापा गया था, और (ख) सभी क्षेत्रों में यह कार्य मुगल प्रशासन द्वारा पूरा कर लिया गया था और इससे संबंधित आंकड़े भी उपलब्ध हैं।

परन्तु ग्रन्थों और सांख्यिकी प्रमाण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि **आइन** में उल्लिखित **आराजी** वह इलाका था जिसे राजस्व के उद्देश्य से मापा गया था। इसमें नहीं जोती जाने वाली जमीन, और कुछ खेती योग्य और खेती न करने के योग्य खाली भूमि बंजर भूमि को भी शामिल किया गया है। इसके अलावा सब जगह भूमि की माप संपन्न नहीं हुई थी।

उपरोक्त तर्कों के आधार पर कहा जा सकता है कि उत्तर भारत की जनसंख्या के संबंध में मोरलैंड के आकलन की साख काफी कम हो गई। दक्खन और दक्षिण भारत के संदर्भ में भी इसका आधार कमजोर है। सैनिक : नागरिक अनुपात का आधार न केवल मनमाना है बल्कि उस पर भरोसा भी नहीं किया जा सकता है। प्रथम विश्वयुद्ध के पूर्व फ्रांस और जर्मनी के सैनिक : नागरिक अनुपात को आधार बनाना असंगत है। आधुनिक राज्यों और अर्थव्यवस्था में सैनिक : नागरिक अनुपात आगे पीछे होता रहता है। इनके आधार पर उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के आधुनिक काल से पहले के सैनिक : नागरिक के विभिन्न अनुपातों की सीमा को किसी भी प्रकार निर्धारित नहीं किया जा सकता है। इसके अलावा मोरलैंड ने दक्खनी राज्यों की सैनिक संख्या का पता लगाने के लिए यूरोपीय यात्रियों के आम वक्तव्यों को आधार बनाया है।

इसके अलावा मोरलैंड ने इन दो क्षेत्रों से बाहर पड़ने वाले इलाकों की जनसंख्या को कम आंका। उत्तर भारत तथा दक्खन के अलावा अन्य क्षेत्रों की जनसंख्या को सही ढंग से आंकते हुए किंग्सले डेविस ने अपनी पुस्तक, **पॉपुलेशन ऑफ इंडिया एंड पाकिस्तान** में मोरलैंड द्वारा पूरे भारत की जनसंख्या के आकलन को बढ़ाकर 12 करोड़ 50 लाख कर दिया। आनुपातिक दृष्टि से जनसंख्या में दिखाई गई यह बढ़ोत्तरी सही लगती है पर इसमें भी मोरलैंड द्वारा अपनाए गए तरीकों की आधारभूत कमियां दूर नहीं होती है।

मोरलैंड के आकलन पर कई प्रकार की आपत्तियों के बावजूद अभी भी जनसंख्या मालूम करने के लिए कई विद्वान खेती के विस्तार को ही आधार बना रहे हैं। **आइन** में **आराजी** के आंकड़ों से 1601 ई. में खेती की जाने वाली भूमि का अंदाजा लगाया जा सकता है।

आराजी में शामिल खेती योग्य और खेती अयोग्य बंजर भूमि को नजर में रखते हुए और मुगल साम्राज्य के विभिन्न भागों में की गई माप के विस्तार को स्थापित करती हुई शीरीन मुसवी अपनी पुस्तक **इकानॉमी ऑफ द मुगल अम्पायर** में लिखती है कि 1601 ई. में मुगल शासन काल में 1909-10 ई. के मुकाबले खेती योग्य जमीन के 55 प्रतिशत हिस्से पर ही खेती होती थी।

इरफान हबीब ने अपने विश्लेषण द्वारा इस आकलन को और भी मजबूती प्रदान की। उन्होंने 17वीं शताब्दी और 1881 ई. में साम्राज्य के विभिन्न प्रांतों के गांवों के आकार और संख्या की तुलना की। इरफान हबीब के अनुसार 17वीं शताब्दी के दौरान 1900 ई. की अपेक्षा आधी से अधिक पर दो तिहाई से कम भूमि पर खेती होती थी।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर शीरीन मुसवी निम्नलिखित तीन धारणाएं स्थापित करती हैं :

i) वर्तमान शताब्दी के प्रथम दशक की तुलना में 1601 ई. में कुल 50 से 55 प्रतिशत खेती की जाती थी।

ii) कुल जनसंख्या का 15 प्रतिशत शहरों में और 85 प्रतिशत गांवों में रहता था।

iii) 1901 ई. की तुलना में 1601 ई. में औसत कृषि जोत का आकार 107 प्रतिशत ज्यादा था।

उनके अनुसार 17वीं शताब्दी के दौरान भारत की जनसंख्या 14 करोड़ से 15 करोड़ तक के बीच थी।

26.2.3 कुल और प्रति व्यक्ति भू-राजस्व के आधार पर

अशोक वी. देसाई ने भी जनसंख्या का पता लगाने के लिए विभिन्न आंकड़ों का सहारा लिया है। इसके लिए उपयोग में लाई जाने वाली पूर्वधारणाएं जटिल हैं। देसाई ने निम्नतर शहरी मजदूर की क्रय शक्ति की तुलना पहले **आइन** में दिए गए मूल्य और मजदूरी के आधार पर की है और फिर 1960 ई. के आरंभ में अखिल भारतीय औसत मूल्य और मजदूरी के आधार पर की है। अबुल फजल द्वारा बताई गई उपज और फसल की दर के आधार पर अकबर के शासनकाल में खाद्यान्न की कुल खपत का अंदाजा लगाया गया जो 1960 ई. में होने वाली खपत का पाँचवा हिस्सा थी (उस समय अधिक उपज के क्षेत्र में ही खेती केन्द्रित थी)। उनके अनुसार 1961 ई. की तुलना में 1595 ई. में प्रति इकाई उत्पादकता 25 से 30 प्रतिशत ज्यादा थी। इसी के आधार पर उन्होंने कृषि में प्रति मजदूर उत्पादकता का पता लगाया जो उनकी गणना के अनुसार 1961 ई. की तुलना में 1595 ई. में दुगनी थी।

1960 के दशक में उपभोग की सांख्यिकी को आधार बनाते हुए देसाई ने 1595 ई. के उपभोग स्तर का अनुमान लगाया। उनके अनुसार आधुनिक स्तर पर यह 14 और 18 गुना अधिक पड़ता है। इसके बाद वह 16वीं शताब्दी के दौरान प्रत्येक प्रमुख कृषि उत्पादों का अलग-अलग औसत उपभोग बताता है।

इन आंकड़ों और अन्य आधुनिक आंकड़ों की सहायता से देसाई ने विभिन्न फसलों के प्रति व्यक्ति क्षेत्र का पता लगाया जिसे बाद में राजस्व दरों से गुणा किया और इससे प्रति व्यक्ति भू-राजस्व का आकलन किया गया।

कुल **जमा** (जिसे देसाई कुल भू-राजस्व मानते हैं) को इस आंकलित प्रति व्यक्ति राजस्व से विभाजित करके देसाई ने साम्राज्य की जनसंख्या 6 करोड़ 50 लाख आंकलित की। यह संख्या मोरलैंड के आकलन की पुष्टि करती है।

एर्लेन हेस्टन और शीरीन मूसवी ने देसाई की धारणाओं और विधि की आलोचना की है। हेस्टन की मुख्य आपत्ति इस बात को लेकर है कि 1595 ई. की उपज को बढ़ा चढ़ाकर आंकलित किया गया है। शीरीन मूसवी को कुछ अन्य मुद्दों पर गंभीर आपत्ति है। उनकी आपत्ति इस बात पर है कि 16वीं शताब्दी के आंकड़ों के साथ तुलना करने के लिए अखिल भारतीय आधुनिक सांख्यिकी का उपयोग किया गया है। **आइन** में उल्लिखित मूल्य और मजदूरी केन्द्रीय (मुगल शिविर में प्रचलित मूल्य) दृष्टिकोण से

प्रस्तुत किए गए हैं और आगरा (तथा संभवत: लाहौर) के लिए प्रयुक्त होते थे। अत: आधुनिक अखिल भारतीय स्तर से इनकी तुलना उपयुक्त नहीं होगी। इसी प्रकार **आइन** में दी गयी मानक फसल दर या तो शेरशाह की राजधानी दिल्ली के आस पास के इलाके पर लागू होती थी या ज्यादा से ज्यादा **दस्तूर उल अमल** (राजस्व दरों की तालिका) वाले इलाकों जैसे उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब पर इसे लागू माना जा सकता है। अत: इनकी तुलना अखिल भारतीय उपज से नहीं की जा सकती है। इसके अलावा देसाई ने साम्राज्य की कुल **जमा** को अनुमानित प्रति व्यक्ति भूमि कर से विभाजित किया है और **जब्त** प्रांतों (नगद राजस्व वसूलने वाले इलाके) और अन्य इलाकों में अंतर स्थापित नहीं किया है जहां कर प्रणाली का स्तर बिल्कुल भिन्न था। उनकी इस मान्यता में भी सुधार की आवश्यकता है कि **जमा** कुल राजस्व के बराबर थी। जबकि जैसाकि हम इकाई 15 में पढ़ चुके हैं यह (**जमा**) वह अनुमानित आय थी जो **जागीरदारों** को अनुदान में मिले अपने क्षेत्रों से प्राप्त करनी होती थी।

इसके अलावा अकबर कालीन भारत के उपभोग के स्तर की तुलना 1960 ई. के दशक से नहीं की जा सकती है क्योंकि मुगल साम्राज्य मुख्य रूप से गेहूं उपभोग क्षेत्र में ही केन्द्रित था और 1595 ई. में तिलहन की खपत संभवत: इतनी ज्यादा नहीं हो सकती थी जितना 1960 ई. में थी।

शीरीन मूसवी देसाई द्वारा सुझाई गई आधारभूत पद्धति का ही उपयोग करती है पर देसाई की पद्धति पर उठाई गई आपत्तियों के निवारण के लिए वे 1870 ई. के आधार में सुधार करती हैं। वे 1860-70 ई. के उपलब्ध आंकड़ों का इस्तेमाल तुलना और निर्देशात्मकता के लिए करती हैं : पहले वे अकबर कालीन भारत के पांच **जब्त** प्रांतों की जनसंख्या मालूम करती हैं और फिर पूरे अनुपात के आधार पर पूरे मुगल साम्राज्य की जनसंख्या निकालती हैं और फिर इसे अखिल भारतीय स्तर पर जनसंख्या मालूम करने के लिए लागू करती हैं। उनके अनुसार 1601 ई. से जनसंख्या समान रही। उनके अनुसार अकबर के शासनकाल में अकबर के साम्राज्य की जनसंख्या 10 करोड़ थी और पूरे भारत (1947 ई. से पहले के भारत की सीमा के आधार पर) की जनसंख्या 14 करोड़ 50 लाख थी।

बोध प्रश्न 1

i) मुगल साम्राज्य की जनसंख्या के आकलन के लिए मोरलैंड की पद्धति के विरुद्ध उठाई गई आपत्तियों पर विचार कीजिए।

....

....

....

....

....

ii) मुगलकालीन भारत की जनसंख्या मालूम करने के लिए देसाई द्वारा अपनाई गई पद्धति का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

....

....

....

....

....

26.3 जनसंख्या वृद्धि की औसत दर

अगर हम यह मान लें कि 1601 ई. में भारत की जनसंख्या 14 करोड़ 50 लाख और 1871 ई. में 22 करोड़ 50 लाख (1872 ई. की जनगणना तथा इसमें जिन क्षेत्रों को शामिल नहीं किया गया था उनके लिए डेविस द्वारा की गई गणना के आधार पर) थी तो 1601 और 1872 ई. के बीच प्रति वर्ष वृद्धि की

दर 0.21 प्रतिशत होगी। 1601ई. और 1872 ई. की जनसंख्या और औसत वृद्धि दर के आधार पर 1801 ई. में जनसंख्या 21 करोड़ के आस पास रही होगी। इस आकलन में एक प्रकार की संगतता है और 1801 के लिए सबसे ज्यादा मान्य आंकड़ा है। विभिन्न गणनाओं और तर्कों का इस्तेमाल कर इस वर्ष की जनसंख्या को 19 करोड़ 80 लाख से 20 करोड़ 70 लाख के बीच ही बताया गया है।

19वीं शताब्दी (1872-1901 ई.) के अंतिम तीन दशकों में जनसंख्या वृद्धि दर प्रति वर्ष 0.37 प्रतिशत थी। यह दर 1601-1801 ई. के लम्बे काल के लिए हमारे द्वारा की गई गणना से ऊँची है पर यह भी अपने आप में बहुत ज्यादा ऊंची दर नहीं है।

26.3.1 समकालीन यूरोप से तुलना

नीचे यूरोपीय देशों की जनसंख्या की विकास दर प्रस्तुत की जा रही है। इसे यूरोपीय आर्थिक इतिहास के एक प्रमुख ग्रंथ से उदृत किया गया है :

	1600-1700
स्पेन और पुर्तगाल	0.12
इटली	0.00
फ्रांस	0.08
ग्रेट ब्रिटेन	0.31
जर्मनी	0.00
स्वीटजरलैंड	0.18
रूस	0.12
कुल	0.10

इन आंकलनों को देखने से पता चलता है कि यूरोप में भी मुगलकालीन भारत की तरह जनसंख्या वृद्धि की दर कम थी। पर 0.21 प्रतिशत की वृद्धि से पता चलता है कि उस समय एक ऐसी अर्थव्यवस्था कायम थी जिसके तहत "राष्ट्रीय बचत" की जा सकती थी और खाद्यान्न का उत्पादन बढ़ाया जा सकता था, हालांकि इसकी गति काफी कम थी। इस धीमी गति के कारण अकाल जैसे प्राकृतिक प्रकोप के साथ-साथ मनुष्य निर्मित समस्यायें (अधिक राजस्व की मांग एक कारण हो सकता है) भी थी। अगर हमारे पास 1650 ई. या 1700 ई. या उसके आसपास के किसी वर्ष की जनसंख्या का अनुमान लगाने के लिए आंकड़े उपलब्ध होते तो लघु अवधि की जनसंख्या वृद्धि दर का पता लगाया जा सकता था और उन वर्षों में मुगल अर्थव्यवस्था की कार्य क्षमता का अंदाजा लगाया जा सकता था। इन आंकलनों से यह जानने में भी मदद मिल सकती कि 17वीं शताब्दी और 18वीं शताब्दी में जनसंख्या वृद्धि के कारण आर्थिक व्यवस्था में कोई खास बदलाव आया या नहीं। लेकिन दुर्भाग्यवश इस प्रकार का कोई भी आंकड़ा मौजूद नहीं है।

26.3.2 वृद्धि दर के प्रभाव

1601-1801 ई. के बीच जनसंख्या में 0.2 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर के आधार पर हम कई रोचक निष्कर्ष प्राप्त कर सकते हैं। अगर जनसंख्या वृद्धि को पूंजीवादी व्यवस्था से पहले की अर्थव्यवस्था की क्षमता का सूचकांक मान लिया जाए तो मुगल अर्थव्यवस्था को स्थिर या निश्चल नहीं माना जा सकता है क्योंकि दो सौ वर्षा में जनसंख्या की वृद्धि 36 से 44 प्रतिशत के बीच होने का अनुमान है। डेविस का मानना है कि 1601-1801 ई. के दो सौ वर्षों के बीच जनसंख्या 12 करोड़ 50 लाख पर स्थिर रही। इस शून्य वृद्धि दर के सिद्धान्त की जमकर आलोचना हुई।

26.4 ग्रामीण और शहरी जनसंख्या का संघटन

यहां भी शहरी जनसंख्या के लिए कोई निश्चित आंकड़ा उपलब्ध नहीं है। इरफान हबीब ने कृषि उत्पादों के उपभोग की पद्धति के आधार पर शहरी जनसंख्या का अनुमान लगाया है। मुगल शासक वर्ग कुल कृषि उत्पाद का आधा हिस्सा भू-राजस्व के रूप में अपने कब्जे में ले लेता था पर यह सम्पूर्ण राजस्व गांवों से बाहर नहीं जाता था। उनके अनुमान के अनुसार इसका लगभग एक चौथाई कृषि उत्पाद ही शहर जाता था। उनका यह भी मानना है कि शहरों में कृषि उत्पादों का कच्चे माल के रूप में अधिक उपभोग होता था। इस आधार पर उन्होंने बताया है कि शहरों की जनसंख्या कुल जनसंख्या का लगभग 15 प्रतिशत थी।

विभिन्न शहरों की आकलित जनसंख्या

अपनी पुस्तक **तबकात ए अकबरी** (लगभग 1593 ई.) में निज़ामुद्दीन अहमद ने बताया है कि अकबर के शासनकाल में 120 बड़े शहर और 3200 छोटे शहर या कस्बे थे। अकबर के साम्राज्य की कुल जनसंख्या 10 करोड़ थी और 15 प्रतिशत जनसंख्या शहरों में रहती थी। इस प्रकार 3200 शहरों में औसतन 5000 लोग रहते होंगे। हालांकि मुगल साम्राज्य में कुछ शहर काफी बड़े थे। यूरोपीय यात्रियों ने कुछ मुख्य शहरों की जनसंख्या इस प्रकार बताई है:

शहर	वर्ष	आंकलन
आगरा	1609	500,000
दिल्ली	1659-66	500,000
लाहौर	1581	400,000
थट्टा	1631-35	225,000
अहमदाबाद	1663	100,00-200,000
सूरत	1663	200,000
पटना	1631	200,000
ढाका	1630	200,000
मसूलीपट्टम	1672	200,000

बोध प्रश्न 2

1) मुगल साम्राज्य की जनसंख्या वृद्धि की दर पर टिप्पणी लिखें और बताएं कि क्या यह मुगल अर्थव्यवस्था की स्थिरता का द्योतक है?

....

....

....

....

....

2) मुगलकालीन भारत की शहरी जनसंख्या की प्रकृति पर विचार कीजिए।

....

....

....

....

....

26.5 सारांश

मुगलकालीन भारत की जनसंख्या का विश्लेषण करने में मोरलैंड का योगदान महत्वपूर्ण है। उस समय की जनसंख्या का पता लगाने के लिए उसने व्यक्ति : भूमि और नागरिक : सेना के अनुपात को आधार बनाया। पर उसकी पद्धति में दो खामियां थी :

1) अकबर के जमाने में माप पूर्ण नहीं हुई थी।

2) दक्खनी राज्यों के सैनिक : नागरिक अनुपात के विश्लेषण के लिए आधुनिक राज्यों को आधार बनाया गया।

अशोक देसाई ने औसत मूल्य और मजदूरी को आधार बनाया और इस आधार पर उसने अकबर के शासनकाल में विभिन्न फसलों का प्रति व्यक्ति क्षेत्र मालूम किया और प्रति व्यक्ति भू-राजस्व मालूम करने के लिए उसे चालू राजस्व दरों से विभाजित किया और पुन: इस प्रति व्यक्ति राजस्व को अकबर कालीन **जमा** से विभाजित किया। इससे मुगल साम्राज्य की कुल जनसंख्या का पता लगाया। पर इस प्रविधि पर भी विद्वानों ने प्रश्न चिन्ह लगाया। इन आपत्तियों से बचने के लिए शीरीन मुसवी ने इस प्रविधि में कुछ सुधार किया। उन्होंने अकबर के साम्राज्य की जनसंख्या 10 करोड़ और पूरे भारत की जनसंख्या 14 करोड़ 50 लाख बताई। एक रोचक तथ्य यह है कि मुगल कालीन भारत की जनसंख्या की विकास दर की समकालीन यूरोप के देशों की जनसंख्या वृद्धि दर से तुलना करने पर पता चलता है कि भारत की जनसंख्या वृद्धि दर उनसे कम नहीं थी। अत: भारतीय अर्थव्यवस्था को पूरी तरह स्थिर नहीं कहा जा सकता है।

26.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए उपभाग 26.2.2 । बताइए कि मोरलैंड ने जनसंख्या का पता लगाने के लिए व्यक्ति : भूमि और सैनिक : नागरिक के अनुपात को आधार बनाया था। पर इसकी प्रविधि में काफी खामियां हैं। इनका आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

2) देखिए उपभाग 26.2.3 । जनसंख्या मालूम करने के लिए अशोक देसाई द्वारा अपनाई गई प्रविधि का उल्लेख कीजिए और विद्वानों द्वारा उठाई गई आपत्तियों का उल्लेख कीजिए।

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 26.3.1 और 26.3.2 । 17वीं शताब्दी के दौरान भारत की जनसंख्या वृद्धि दर की तुलना यूरोप के देशों की जनसंख्या वृद्धि के साथ कीजिए। विश्लेषण करके बताइए कि किसी भी स्थिति में अर्थव्यवस्था जड़ नहीं थी। यह जनसंख्या वृद्धि विकासशील अर्थव्यवस्था का द्योतक है।

2) देखिए भाग 26.4 ।